SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-4, October to December: 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

"निराला के उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' के निराले बिल्लेसुर"

डॉ. रिन्कु ए. वाढेर

प्रस्तावना

यह उपन्यास एक प्रगतिशील विचारधारा के साथ हास्यपरक और उसके साथ यथार्थवादी विषयवस्तु को लेकर लिखा गया है. निराला जी ने इस उपन्यास में लोगों की संकीर्ण सोच को प्रस्तुत किया है. इस उपन्यास के बिल्लेसुर है तो एक ग़रीब ब्राह्मण पर अपनी जाति की रूढ़िवादिता से बिलकुल ही मुक्त विचारधारा वाले व्यक्ति होने के कारण उनकी बिरादरी वाले लोग उसका बहिष्कार कर देते है. बिल्लेसुर बड़े चालाक व्यक्ति और बड़े समझदार है. वह कहीं भी अपना नुकसान हो ऐसा कोई काम वो कभी भी नहीं करते थे. जातिगत परंपरावादी विचारधारा से युक्त समाज में निराला जी ने इस उपन्यास के द्वारा समाज के सामने प्रगतिशील विचार रखने वाले ब्राह्मण की सूझबूझ को बड़ी सहजता और सरलता से प्रस्तुत किया है. गाँव में रहने वाला एक सामान्य सा व्यक्ति बिल्लेसुर असामान्य सोच रखते है. उसकी यहीं असामान्य सोच इस उपन्यास की विशेषता है.

बीज शब्द – बिल्लेसुर, गाँव, रुढ़िवादी, ब्राह्मण, ग़रीब.

मुख्य अंश -

बिल्लेसुर के चार भाईओं में माता पिता के गुज़र जाने के बाद ज़्यादा समय तक बनी नहीं. सभी ने अपना अलग रास्ता नाप लिया. अपने गाँव में बिल्लेसुर ने सुना था कि बंगाल का पैसा टिकता है, बम्बई का नहीं. इसलिए वे बंगाल के बर्दवान जाने का तय करते है, रास्ते में बिना टिकट के रेलगाड़ी से कई बार उतार भी दिए जाते है, पर फिर भी ऐसे ही सफ़र करते हुए ये बर्दवान पहुँच ही जाते है. बिल्लेसुर सत्तीदीन के यहाँ रहने लगे. वहां उन्हें ढोर चराने का काम मिलता है, हालाकि उन्होंने अपने गाँव से बर्दवान का समन्दर ढोर चराने के लिए नहीं पार किया था पर फिर भी परदेश में जब तक नौकरी न लगे वे ये काम स्वीकार कर लेते है. वरना फिर अपने गाँव वापिस चले आने का सोचते है. बिल्लेसुर को ढोर चराने के अलावा भी कई अन्य काम करने पड़ते. धूप में नंगे सिर दौड़ते हाँफते बिल्लेसुर लगातार मेहनत करते रहे. हालाकि सत्तीदीन की पत्नी को बिल्लेसुर की कमाई अखरती थी, "उन दिनों कईयों से बिल्लेसुर कह चुके, मर्द से औरत होना अच्छा. कोई नहीं समझा. बिल्लेसुर सूखे होठों की हार खाई, हँसी हँसकर रह गए."[१]

बिल्लेसुर जितना सोचते और समझते है उतना ये बोलते नहीं थे. सत्तीदीन की पत्नी के विचार से बिल्लेसुर भलीभाँति अवगत थे. "गाँव में भी बिल्लेसुर की बर्दाश्त करने की आदत पड़ी थी. कभी कुछ बोले नहीं. अपनी ज़िन्दगी की किताब पढ़ते गये. किसी भी वैज्ञानिक से बढ़कर नास्तिक. बिल्लेसुर दूसरे का अविश्वास करते-करते एक ख़ास शक्ल के बन गये थे"[२] नौकरी पाने का प्रयत्न भी किया पर ऊंचाई के कारण उसमें भी सफलता न

मिली. पर फिर भी किसी सिपाही की छुट्टी होने पर उनके हिस्से के काम पर बिल्लेसुर को काम मिलता रहा. जमादार सत्तीदीन और उनकी पत्नी को संतान न होने के कारण पूरी की यात्रा करना तय करते है. साथ में नौकर की ज़रूरत होने पर वे बिल्लेसुर को साथ ले जाना तय करते है. बिल्ल्लेसुर भी फ़ोकट में जगन्नाथ जी होते हुए बर्दवान से फिर अपने गाँव की ओर प्रस्थान करते है.

लगभग एक साल जितना अरसा बीतने के बाद बिल्लेसुर अपने गाँव वापिस आते है. साथ में ये अपनी कमाई हुई जमापूंजी भी लाते है. गाँव वाले अंदाज़ा लगाने लगे कि बिल्लेसुर कितने पैसे कमाकर आये है. चोर भी मौके की तलाश करने लगे कि बिल्लेसुर को कब लुट लिया जाये. पर ये तो होशियार बिल्लेसुर है. हर एक के साथ सोच समझकर बोलने वाले. गाँव वाले जो भी मिलते उनसे ये बात निकलवाना चाहते कि बिल्लेसुर कितने पैसे कमाकर लाये है, पर मजाल है बिल्लेसुर किसी को कुछ भी पता लगने दे. गाँव में आकर बिल्लेसुर तीन बड़ी-बड़ी बकरियाँ खरीदते है. त्रिलोचन उसे १०० रूपये में अपने बैल बेचना चाहता है, पर बिल्लेसुर अगले ही दिन बकरियाँ खरीद लेते है. किसानी वो साझे में करने की बात करते है. और इसके लिए वह बैल खरीदने में अपने १०० रूपये बर्बाद नहीं करना चाहते.

जब गाँव वाले बिल्लेसुर को ब्राह्मण होकर बकरियाँ रखने पर उसकी बातें बनाते है. पर बिल्लेसुर किसीको जवाब देना ज़रूरी नहीं समझते. "मन में कहा, "जब ज़रूरत पर ब्राह्मणों को हल की मूठ पकड़नी पड़ी है, जूते की दूकान खोलनी पड़ी है, तब बकरी पालना कौन बुरा काम है?"[३] कुछ लोग बकरियों को लोभी दृष्टि से देखते है, क्यूंकि बकरियों के दूध से आमदनी अच्छी होगी. बिल्लेसुर मंदिर में प्रार्थना करने भी जाते है पर भगवान के दर्शन करते वक्त भी गलियारे में जा रही अपनी बकरियों पर नज़र रख सके इस तरह वो दर्शन करते है. गाँव के कुछ लोगों को बिल्लेसुर को परेशान करने के लिए बकरी को मारने का सोचते है, पर बिल्लेसुर सतर्कता दिखाते है. गाँव में अपने लिए किराये पे पुराना मकान भी ले लेते है, जहाँ वे अपनी बकरियों के साथ रह सके. गाँव में उनका अपना कह सके ऐसा कोई आदमी न था. पर वो जानते थे कि आदमी को ज़िन्दा रहने के लिए काम करना ज़रूरी है. "गाँव वाले दिल का गुबार बिल्लेसुर को बकरिहा कहकर निकालने लगे. जवाब में बिल्लेसुर बकरी के बच्चों के वही नाम रखने लगे जो गाँववालों के नाम थे,"[४] आखिर एक बार गाँव के कुछ लड़के बिल्लेसुर के सबसे तगड़े पट्ठे को जिसकी कीमत आठ रुपये थी उसे गायब कर देते है और उसे मार देते है. बिल्लेसुर इस पर बहुत उदास होते है, पर फिर भी आँख में आंसू नहीं आने देते. भगवान से जाकर वह शिकायत करते है "देख में ग़रीब हूँ. तुझे सब लोग गरीबों का सहायक कहते हैं, मैं इसीलिए तेरे पास आता था, और कहता था, मेरी बकरियों को और बच्चों को देखे रहना. क्या तूने रखवाली की, बता, लिए थूथन-सा मुँह खड़ा है? कोई उत्तर नहीं मिला. बिल्लेसुर ने आँखों से आँखें मिलाये हुए महावीरजी के मुँह पर वह डंडा दिया कि मिटटी का मुँह गिली की तरह टूटकर बीघे भर के फासले पर जा गिरा."[५]

बिल्लेसुर जिस समय बकरी रखते थे उस समय तक लोगों में बकरी के दूध की गुणवत्ता किसी को ज़्यादा खबर नहीं थी. बिल्लेसुर ने बकरी का दूध बेचना चाहा पर नहीं बिका तो उन्होंने उसका खोया बनाया जो भी भैंस के दूध की तुलना में कम मात्रा में बना. जिसे वह हलवाई के वहा दे आते है, पर बकरी के खोये में बदबू आने के कारण हलवाई भी उसे लेने से इंकार कर देता है. बिल्लेसुर इसमें भी चतुराई से काम लेते है, बकरी के दूध को जमाकर मठ्ठा निकालने लगे, जो खुद भी पिने लगे. फिर मक्खन का घी निकालकर उसमें भैंस के घी का चौथाई हिस्सा मिलाकर थोड़े सस्ते दाम में बेच आते थे. इस प्रकार अपनी मेहनत से ८ रूपये के बकरे के मारे जाने का

नुकसान छः सात दिन में ही पूरा कर लेते है. साथ ही खेत में शकरकंद की खेती भी करते है. गाँव में बिल्लेसुर इस प्रकार धनिक होने के कारण चर्चा में रहने लगे.

त्रिलोचन से बैल न लेने पर बिल्लेसुर की धनिकता पर मोहित होकर त्रिलोचन किसी भी तरह बिल्लेसुर को अपने पेच में खिंचने का प्रयास करता है. वह उसे लड़की के विषय में कोई बात बताये बिना ब्याह के लिए एक लड़की दिखाकर उससे पैसे ले लेना चाहता था. वह उससे ब्याह के नाम पर १५० जितने रूपये लेना चाहता था, चालक बिल्लेसुर लड़की किस गाँव या कहाँ से है इस विषय में त्रिलोचन का पीछा करके पता लगा लेते है कि उसके इरादे क्या है. अपनी होशियारी और सूझबूझ से वह मन्नी की सास के किसी रिश्ते की लड़की के साथ अपनी शादी तय कर लेते है. बिल्लेसुर वहाँ पर भी हर तरह की होशियारी से काम लेते है. वो त्रिलोचन को मना कर देते है, इस पर त्रिलोचन नाराज़ हो जाता है. तो उसे वह कह देते है "देखो, फिर पीछे पछताओगे. त्रिलोचन बढ़कर बोले. 'पछताने का काम ही नहीं करते, बहुत समझकर चलते हैं, त्रिलोचन भय्या.' बिल्लेसुर ने कड़ाई से जवाब दिया."(६)

गाँव वाले बिल्लेसुर की शादी की बात सुनकर चौंक जाते है. गाँव के हर लोग बिल्लेसुर को पूछने आने लगे. कुम्हार से लेकर चमार, नाई सब बिल्लेसुर के आगे पीछे घुमने लगे. गाँव के लोगों के साथ दूसरे गाँव के लोग भी बिल्लेसुर के घर के आगे गुज़रकर उसे पूछने लगे. बकायदा बारात ले जाकर बिल्लेसुर शादी करते है. मेहनती बिल्लेसुर किस प्रकार रुढ़िवादी सोच के आगे झुके बिना चुपचाप अपना काम करते जाते है. गाँववालों की बातें सुने बिना बिल्लेसुर पैसे कमाकर उपन्यास के अंत में शादी भी करते है. इस प्रकार ये उपन्यास समाज की संकुचित सोच के आगे बिल्लेसुर के यथार्थवादी और विस्तृत दृष्टिकोण को दिखता है. वह अपनी आर्थिक स्थिति को अपनी मेहनत से बदलते है. बिल्लेसुर ब्राह्मण होकर कुछ प्रकार के काम नहीं करने चाहिए या कुछ विशेष प्रकार के काम ही करने चाहिए ऐसा नहीं मानते थे. बिल्लेसुर अपने समय में अपने गाँव वालों की दकियानुसी और परंपरावादी सोच को नहीं मानते. बल्कि अपने प्रगतिशील और एक तरह से कह सकते हैं कि क्रांतिकारी विचार से अपनी नई राह बनाते है. हालांकि उस समय बिल्लेसुर के लिए ये आसान राह नहीं थी.

निष्कर्ष

इस प्रकार बिल्लेसुर बकरिहा अपने ही गाँव में धनिक माने जाते है. अपनी समझदारी और सूझबूझ से विवाह कर लेते है. पर किसी को भी अपने धनी होने का राज़ अपने जीते जी नहीं खुलने देते. इससे साबित होता है कि मान सम्मान जाति के आधार नहीं धन के आधार पर मिलता है. ब्राह्मण होने के बावजूद वह बकरियाँ रखते है. वह लोगों की आलोचना की तरफ ध्यान नहीं देते. समाज की खोखली सोच को निराला जी ने स्पष्ट रूप से उजागर किया है. बिल्लेसुर बकरिहा कहे जानेवाले बिल्लेसुर के धनिक होने की बात सबको पता चलती है तो सारी नफ़रत जाति बिरादरी का बहिष्कार अपनेआप समाप्त हो जाता है. कुल मिलाकर समाज के खोखले विचार निराला जी ने बेबाकी से प्रस्तुत किये है. जीवन निर्वाह के लिए ग़रीब ब्राह्मण के लिए बकरियों को रखना भी कोई गलत काम नहीं है. बिल्लेसुर तो खूब मेहनत करते है. साझेदारी में खेती भी करते है. गाँव वाले उनकी धनिकता को देख चौक ही जाते है और उनकी शादी तक उनका विरोध करने वाले उनकी शादी होते देख अपना रवैया और अपने विचारों का त्याग कर बिल्लेसुर के साथ हो जाते है. बिल्लेसुर ग़रीब ज़रूर थे, पर मेहनत करने वाले ब्राह्मण थे. वो अपनी मेहनत से अपनी ग़रीबी दूर करते है.

प्रगतिवादी साहित्यकार के रूप में निराला जी का यह उपन्यास समाज में प्रगतिवादी दृष्टिकोण को लेकर लिखा गया है. साथ ही हास्य रस का भी निर्वाह इस उपन्यास में अच्छे से किया गया है. कुल मिलाकर निराला जी के ये निराले बिल्लेसुर की कहानी को प्रस्तुत करता यह उपन्यास पाठकों का ध्यान अपनी ओर खिंचने में पूरी तरह सफल हुआ है.

सन्दर्भ सूची :

(१) बिल्लेसुर बकरिहा लेखक – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पृष्ठ-१९ प्रकाशक – किताब महल
(२) बिल्लेसुर बकरिहा लेखक – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पृष्ठ-१९ प्रकाशक – किताब महल
(३) बिल्लेसुर बकरिहा लेखक – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पृष्ठ-३४ प्रकाशक – किताब महल
(४) बिल्लेसुर बकरिहा लेखक – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पृष्ठ-४० प्रकाशक – किताब महल
(५) बिल्लेसुर बकरिहा लेखक – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पृष्ठ-४६ प्रकाशक – किताब महल
(६) बिल्लेसुर बकरिहा लेखक – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पृष्ठ-६१ प्रकाशक – किताब महल